अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

विनय कुमार झा
(+2 शिक्षक)
श्री लोलाधर +2 उ0 वि0, बेनीपट्टी,
जिला–मधुबनी, (बिहार)
मो0 नं0–7004814313
Email :-bk79jha@gmail.com

कवि गोपाल सिंह 'नेपाली' का जन्म 11 अगस्त 1911 ई0 को बिहार के बेतिया जिला अन्तर्गत कालीबाग दरबार में हुआ था। प्रकृति और देश–प्रेम की कविताओं ने उन्हें राष्ट्रव्यापी पहचान दी। उत्तर छायावादी युग के कवियों में कवि नेपाली भारतीय संस्कृति व अस्मिता तथा जातीय गौरव की जमीन से जुड़े साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित है। कवि की चेतना महान है वे संवेदनाओं एवं सचेतनाओं के साहित्यकार हैं। कवि ने आजादी से पहले तथा आजादी के बाद विभिन्न अवसरों पर भारतीय युग चेतना को राष्ट्र की अस्मिता के प्रति उद्वेलित किया है तथा हिन्द के जन–मानस में राष्ट्रीयता के भावो को जगाने का कार्य किया है।

कवि गोपाल सिंह 'नेपाली' ने जब काव्य जगत में प्रवेश किया उस समय भारतीय राजनीति हलचल के दौर से गुजर रही थी। देश अंग्रेजों का गुलाम था। कवि ने अपने रचनाओं के द्वारा अपने युग को बड़ी इमानदारी से सशक्त स्वर में वाणी देने का सफल प्रयास किया। 'उमंग', 'पक्षी', 'रागिनी', 'नीलिमा', 'पंचमी', 'नवीन' तथा 'हिमालय ने पुकारा' आदि इनके सफल काव्य व गीत–संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त कई पत्र–पत्रिकाओं यथा 'सुधा', रतलाभ टाइम्स', 'पुण्य भूमि' व 'योगी' आदि के माध्यम से जातीय चेतना को जगाया है। कवि नेपाली उच्च कोटि के राष्टभक्त कवि हैं, स्वदेश की मिट्टी से कवि को स्नेह है, अपने देश की संस्कृति और सभ्यता इतिहास और भूगोल पर कवि को गौरव है। वतन के मनुष्य, पशु–पक्षी लता, गुल्म, नदी–पर्वत, खेत–खलिहान सभी से कवि को प्रेम है। कवि के राष्ट्रप्रेम परक रचनाओं में जो ओज है वह न केवल हृदय के आवेग से उद्दीप्त है, बल्कि शाश्वत स्नेह की संवेदना से उद्भूत है। कवि की पहली कविता संग्रह 'उमंग' का प्रकृति प्रेम उसके राष्ट्र प्रेम से जुड़ा हुआ है। 'उमंग' कविता संग्रह मे कुल 62 कविताएँ है, जिनका समग्र विवेचन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि उमंग में कवि का प्रकृति प्रेम वह धागा है जिसमें कवि ने अपने राष्ट्रप्रेम की मोती को पिरोया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन कवि के देशानुराग का अनुमोदन करता है ''यदि किसी को अपने देश से प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु–पक्षी, लता–गुल्म, पेड़–पत्ते, नदी–निर्झर सबसे प्रेम करना होगा, सबको वह चाह भरी दृष्टि से देखेगा, सबकी सुध करके विदेश में आँसू बहायेगा जो यह नहीं जानते कि कोयल

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

किस चिड़िया का नाम है वे यदि दस बने ठने मित्रों के बीच देश प्रेम का दावा करें तो उससे पूछना चाहिये कि भइया बिना परिचय यह देश प्रेम कैसा?''[1] इस कसौटी पर नेपाली का काव्य बिल्कुल खड़ा उतरता है, भारतीय होने पर कवि को नाज है। कवि हर कीमत पर देश की खुशी कायम रखना चाहते है। उसकी अभिलाषा है–

''मैं सेवा का व्रत लेकर बिचरू जग के कोने–कोने में,
मैं न रहूँ न सही, पर मेरा भारत यह गुलजार रहे।''[2]

जंजीर में जकड़ी हुई माँ भारती को देखकर कवि का रौद्र रूप जाग उठता है दूध की लाज उसे ललकारने लगती है कवि भीरूता की भर्त्सना करता हुआ भैरवी गाने लगता है। वे ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहते हैं यही कारण है कि माँ भारती की मुक्ति के लिए वह विप्लव पथ पर चल पड़ता है।

''तलवारों की धार मोड़ने गर्दन आगे आई है
सिर की मारों से डण्डों की होती यहाँ सफाई है
मर मिटने से ही होता है मान यहाँ बलवानों को
ऐसी–वैसी यह न लड़ाई महा समर मर्दानों का।''[3]

परतंत्र भारत की दुर्दशा देखकर कवि का दिल दर्द से भर उठता है। अंग्रेजों के दमन–शोषण से उबी हुई उदास, विवश जनता को देखकर कवि का हृदय हाहाकार कर उठता है। कवि लिखता है–

''जब जब जनता पर दुःख की बदली छाई है।
तब–तब हमने विप्लव बिजली चमकाई है।।
मानव का परिहास बदलने वाले हैं,
हम तो कवि हैं इतिहास बदलने वाले हैं।।''[4]

कवि गोपाल सिंह 'नेपाली' की राष्ट्रीयता में जो उद्दाम आवेग है वह किसी प्रौढ़ मस्तिष्क की उपज अथवा बुद्धि विचरित न होकर पारिवारिक पृष्ठ भूमि की उपज और जन्मजात थी। पिता सेना की नौकरी में थे, और वहीं से विरासत रूप में इन्हें राष्ट्रीयता की चेतना प्राप्त हुई। कवि आरम्भ से हीं राष्ट्र–चेतना का जागृत कवि रहा है, अपने तीसरे काव्य संग्रह 'रागिनी' में 'भाई'बहन, शीर्षक कविता के द्वारा 'नेपाली' राष्ट्र की मुक्ति और विकास के लिए युवक–युवतियों को भाई–बहन के रूप में आह्वान करते है। कवि बहन को सम्बोधित कर कहता है–

''तू बन जा लहराती गंगा, मैं झेलम बेहाल बनूं,
आज बसंती चोला तेरा, मैं भी सज लूं लाल बनूं।
तू भगिनी बन क्रांति कराली, मैं भाई विकराल बनूं,
पागल घड़ी बहन–भाई है यह आजाद तराना है
मुसीबतों से बलिदानों से, पत्थर को समझाना है।''[5]

कवि नेपाली की राष्ट्रीय भावना का आधार अखण्ड भारत और उसके गौरवशाली इतिहास से प्रेरित है कवि अपने काव्य संग्रह 'पंचमी' के 'विशाल' भारत' शीर्षक कविता को राष्ट्रीय गान माना है। यह कविता भारत के भूगोल की हीं नहीं वरण

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

उसके उज्ज्वल अतीत की पुनर्सृष्टि की कविता है। भारतवासी आत्मदान से अपनी अस्मिता की रक्षा करते रहे है। कवि का स्वर है।–

''जहाँ कोढि जन जिनका जीवन
जिनका यौवन, जिनका तन मन,
सब न्यौछावर, स्वतत्रंता पर,
बैठे घर पर दिये जलाकर
वन्दन करते है, वृद्ध–बाल
भारत अखण्ड, भारत विशाल।''[6]

इसी तरह 'नीलिमा' मे कवि राष्ट्र प्रेम का गायन करते हुए लिखते हैं –

''प्रेमी मानव को वन्दन है, अखिल विश्व का अभिनन्दन है,
भारत को जो कुछ कहना है, उसका उद्‌गार हिमालय है।''[7]

नेपाली के छठे काव्य संग्रह 'नवीन' मे राष्ट्रीय चेतना से सम्बद्ध कई कविताएँ है, स्वतंत्रता का दीपक' ' मैं गायक हूँ स्वच्छन्द हिमालय का' 'भारत' माता' और 'जय–जय कार' आदि कई कविताओं के द्वारा कवि अपने राष्ट्रीय चेतन को व्यक्त करते है। कवि रूढ़िवादी और व्यक्तिवादी विचार धारा के प्रति विद्रोह का भाव रखते हैं तथा इसे स्वाधीनता के मार्ग में बाधा मानते हैं–

''सड़ी गली प्राचीन रूढ़ि के भवन गिरेंगे, दुर्ग ढ़हेंगे
युग–प्रवाह पर कटे वृक्ष से दुनिया भर के ढ़ोंग बहेंगे
पतित–दलित मस्तक ऊँचा कर संघर्षों की कथा कहेंगे।
और मनुज के लिए मनुज के द्वार खुले के खुले रहेंगे।''[8]

वास्तव में नेपाली काव्य में राष्ट्रीय भावना की समीक्षा दो रूपों में की जानी चाहिए एक स्वतन्त्रता से पूर्व और दूसरा स्वतंत्रता के बाद 'नवीन' काव्य संग्रह तक नेपाली की राष्ट्रीयता का एक पक्ष हमारे सामने आता है, इस राष्ट्रीयता में स्वाधीनता की पुकार है, सत्याग्रह है, अहिंसा है और है सहिष्णुता। किन्तु उनके राष्ट्रीयता का दूसरा पक्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के समय लिखी गई काव्य संग्रह। हिमालय ने पुकारा में देखने को मिलता है। यहाँ तक आते–आते कवि की मानसिकता बदली हुई नजर आने लगती है। उनका दृष्टिकोण बदला हुआ दिखाई देता है। यहाँ वे अहिंसा से हिंसा की ओर सहिष्णुता से प्रतिकार की ओर और सत्याग्रह से युद्धग्रह की ओर बढ़े प्रतीत होते हैं। 'हिमालय ने पुकारा' कवि नेपाली की उग्र राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है। इनमें कुल 38 कविताएँ राष्ट्रीय जागरण की कविताएँ हैं। यहाँ कवि को लगता है कि शांति और अंहिसा के उपेदेशों से राष्ट्र की रक्षा नहीं हो सकती है इस संग्रह की एक–एक कविता अपने–आप में एक अस्त्र है, जिसमें दुश्मन को परास्त कर देने की क्षमता है, शोषण चक्र को ध्वस्त कर देने की शक्ति है, और पाखण्ड को चूर–चूर कर देने की ताकत भी।

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

हिमालय ने पुकारा शीर्षक काव्य संग्रह के सभी गीतों में प्रायः कवि की राष्ट्रीयता में युद्ध का उद्घोष है, और शत्रु को विनष्ट कर देने का संकल्प भी वे देश की रक्षा के लिए धर्म और जाति से ऊपर उठने की प्रेरणा देते हैं, कवि कहते हैं–

''आजाद रहा देश तो फिर उम्र बड़ी है
मंदिर भी है, गिरिजा भी है, मस्जिद भी खड़ी है
संग्राम बिना जिन्दगी आँसू की लड़ी हैं
तलवार उठा लो तो बदल जाय नजारा
चालीस करोड़ो को हिमालय ने पुकारा।''[9]

कवि की प्रत्येक साँस से देश जागरण एवं जन जागरण की कविता मुखरित होने लगी। वे घायल हिमालय की ओर से सारे देश को 'वन मैन आर्मी' की भूमिका में जगाने लगे और कहने लगे–

''शंकर की पूरी चीन में सेना को उतारा
चालीस करोड़ो को हिमालय ने पुकारा
हो जाय पराधीन नहीं गंगा की धारा
गंगा के किनारे को हिमालय ने पुकारा।''[10]

वस्तुतः 'हिमालय ने पुकारा' की कविताओं में कवि को वहीं बेचैनी है जो उनके पूर्ववर्ती रचनाओं में आजादी की प्राप्ति के लिए थी यह दूसरी बात है कि पहले बेचैनी के साथ सहिष्णुता थी किन्तु बाद में वह हिंसा और आक्रोश में बदल गयी कवि कहने लगे–

''इतिहास पढ़ो समझो तो यह मिलती है शिक्षा
होती न अहिंसा से कभी देश की रक्षा
क्या लाज रही जबकि मिली प्राण की भिक्षा
यह हिन्द शहीदों का अमर देश है प्यारों
चालिस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा''।[11]

अन्ततः हम कह सकते हैं कि कवि नेपाली की राष्ट्रीयता में संकल्प है और जागरण भी, सहिष्णुता है और प्रतिकार भी तथा उद्बोधन है, और आत्म बोध भी। अपनी कविता में वे एक कवि की तरह भारत के अतीत की महिमा और गरिमा का गान ही नहीं करते वरण इसके आत्म–सम्मान और आजादी की रक्षा के लिए एक योद्धा की तरह युद्धरत भी प्रतीत होते हैं। अतः राष्ट्रीयता के संदर्भ में कवि गोपाल सिंह 'नेपाली' को एक सफल 'राष्ट्रवादी योद्धा के रूप में माना जाना चाहिए।

***

Volume 7, Issue4, (October-December 2019)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

संदर्भ ग्रंथ

1. नेपाली चिंतन–अनुचिंतन स0 डॉ0 सतीश कुमार राय पृ0–248
2. 'उमंग'–गोपाल सिंह नेपाली पृ0–118
3. वही– वही – पृ0–103
4. पषिद् पत्रिका–अप्रैल 2011 नचिकेता पृ0–139
5. 'रागिनी'–गोपाल सिंह नेपाली, पृ0–62
6. 'पंचमी'–गोपाल सिंह नेपाली, पृ0–15
7. 'नीलिमा' – वही – पृ0–77
8. 'नवीन' – वही – पृ0–28
9. 'हिमालय ने पुकारा' – वही – पृ0–22
10. वही – वही – पृ0–24
11. वही – वही – पृ0–25